

अममवगृह्णितैमवद्विज्जलप्यानां ह तद्वज्रम्

श्रीविपुलचरिसरना॥

ॐ

ॐ

1453

प्रित्वनाचम्य॥ संध्ययाय॥ प्रातसंध्ययाय॥ द्वात्रिंशन्नाना
नावतय॥ अथलप॥ लंघनहाय॥ उकात्रे॥ ॐ नमो वाचतसे॥
नात्रयउवाच॥ एगवे सर्वधर्मसु ब्रह्मतता विद्यं वता॥ अतु
मिच्छामि हं देवनवतता गुरुजन॥ विहसति उवाच॥
ॐ नृवं लंपत गुरुं पवित्रं पापनाशनं॥ ॐ कालप्रथमं

तृदितियमग्नी देवता॥ त्रित्रियं नागदेवत्वं॥ चतुर्थस्य मरु
वता॥ पंचमं पृथिवी देवत्वं॥ षष्ठं वैवस्वतापता॥ सप्तमं वासुदे
वत्वं॥ अस्तमसूर्य देवता॥ नवमं च सर्वदेवत्वं॥ ॐ ऐत्यनवसु
प्रका॥ नात्रयउवाच॥ केन वाचा चिता सुग्रा केन वा त्रिगुणियता॥
महं श्वत्रकृताग्रचु गायत्रि अतिमत्रिस्विता॥ तस्मात्सर्वपियन्य

नमो विष्णवे नमः ॥ ॐ कात्यायनमः ॥ ॐ अग्नी देवताय
नमः ॥ ॐ नाग देवताय नमः ॥ ॐ स्वप्न देवताय नमः ॥ ॐ प्रियो दे
वताय नमः ॥ १॥ ॐ प्रज्ञापनय नमः ॥ ॐ वासु देवताय नमः ॥
ॐ सूर्य देवताय नमः ॥ ॐ सर्व देवताय नमः ॥ १॥ १॥ १॥ १॥
सन्ध्या गायत्रि जप १०८ ॥ सूर्य गायत्रि ॥ ३॥ नाग यनत्रा
सत्रि ॥ १॥ अर्धो न गायत्रि ॥ १॥ मर्त्येण य गायत्रि ॥ ३॥

पञ्चम गायत्रि ॥ ३॥ उग्र च युः ॥ ॐ ह्रीं उग्र च युः यविष्ण
हृद्गो विविमहन्त नो च यि प्र चो दयात ॥ ॥ ३॥ लक्ष्मी या ॥ ४॥
सु सिद्धि लक्ष्मी विष्णु हन्त वात्स्यायि महन्त नो लक्ष्मी प्र चो दयात
॥ ३॥ कात्याय ॥ ॐ ह्रीं कात्याय त्रिविष्णु हन्त सर्व विविम
हन्त नो कात्याय प्र चो दयात ॥ ३॥ पूर्व या ॥ ॐ मित्रि मनाथाय वि
ष्णु हन्त श्री कल्याय विमहन्त नो सिद्धि प्र चो दयात ॥ ३॥

तल दवया॥ सह स्रजाय विन हत न्द वा यधि मह तन्ना त्र
प्रचा दया त धा॥३॥ त्रिपूया॥ ई की सौति पूरा दवि विन
ह की काम्य स्वति द्विमह तन्ना की न्यप्र चा दया त धा॥३॥
नी वनि या॥ निरीज नाय विन ह निगा का ता य द्विमह तन्ना स
न्यप्र चा दया त धा॥३॥ धा न न ड प ल प॥ स र्ध ना गाय न या॥

~~इत्यादि~~ अथा त म सं अ य स क ति स हि ती॥४॥
पाठ का॥ न वा त्मा॥ श्री कंठ॥ वा ता हि अ धा त व ड्र व ति सि ३
ह का त॥ सं का त॥ क म्मी॥ ह स॥ सह ड ड च द्वा या॥ सि द्वि
ल फी या॥ का लि या॥ न वा त्मा या॥ पूर्व या॥ अ धा त न सि
खा॥ तल दवया॥ ति प्र या॥ नी वलि धा त॥ अ दव गा ह क

ल्ये ६२ द्यादि॥ मासुन थात्र॥ जह्मापविर्त॥ प्लान ज्ञानाच
तदु य॥ मत्रति थासु न्धा द्याय॥ ०० ति ज्ञाना हि ल विधि
समासु सम्यत २२ मि मा य सु दि ५ सु मि ध्यय का जह्मा
लिषीत कर्मा चार्थ सिद्धि मान मिह न वा या शत शुभ

ॐ श्री वरगतामरवी सर्वदूषा नावार्यमुखं स्तभय जिह्वा कीलया
कीलयवुधि नासय ॥ श्री ह्र स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥

राम

ॐ नमश्चटिकाये नमः ॥ ॥ चतुर्था माति निस्तोत्रम् ॥ श्री भैरव उवाच
नयत्वं मातिनी देविनी मन्ते मत्त नाशिनी ॥ ज्ञानशक्तिः प्रमुर्दे वि
वधिस्त्वेतत्तवर्देनि ॥ जननि सर्वभूतानां ससारे स्त्वेव स्थिता ॥
माता पिता वत्तिदेविकार न्यकृत वत्सले ॥ ॥ जयति परमतत्त्व
निर्वाण संभूतिस्तेजो मयी निस्मृताः व्यक्तस्या परज्ञानशक्ति

स्त्वमिद्वक्त्राया मङ्गलात्तज्जरेखापूनः सप्त नागेन्द्रवत्कुरात्ताका
रुतया प्रभं नागिन्द शक्तिः स्तुसंगीयस्य भाष्यरज्योतिरुपासिवा
ज्यष्टानामाचवामाचरो द्वीमनाध्याम्बिकाविन्दुरुपावच्यताद्व
चक्षुःकृतिस्त्वत्रिको मरणा अड मकार इकार ओकार संज्यु ज्यतेत
मायतते ॥ तत्त्वरुपास्वरुपा भगाकार वरुपा यनि च्यादित ध्वातत
भवाये निसुपा च श्रीकराट संमोहि नीरुद्र माता तथा नन्द स

क्तिः संसृष्टी त्रिमूर्तिमत्ता घिसुनिः भारभूति तीर्थे शाचि ते
स्थान भूता हरारवा चरुति स भौति स

ASHA ARCHIVES	1453
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीगणेशाय नमः	

ASHA ARCHIVES

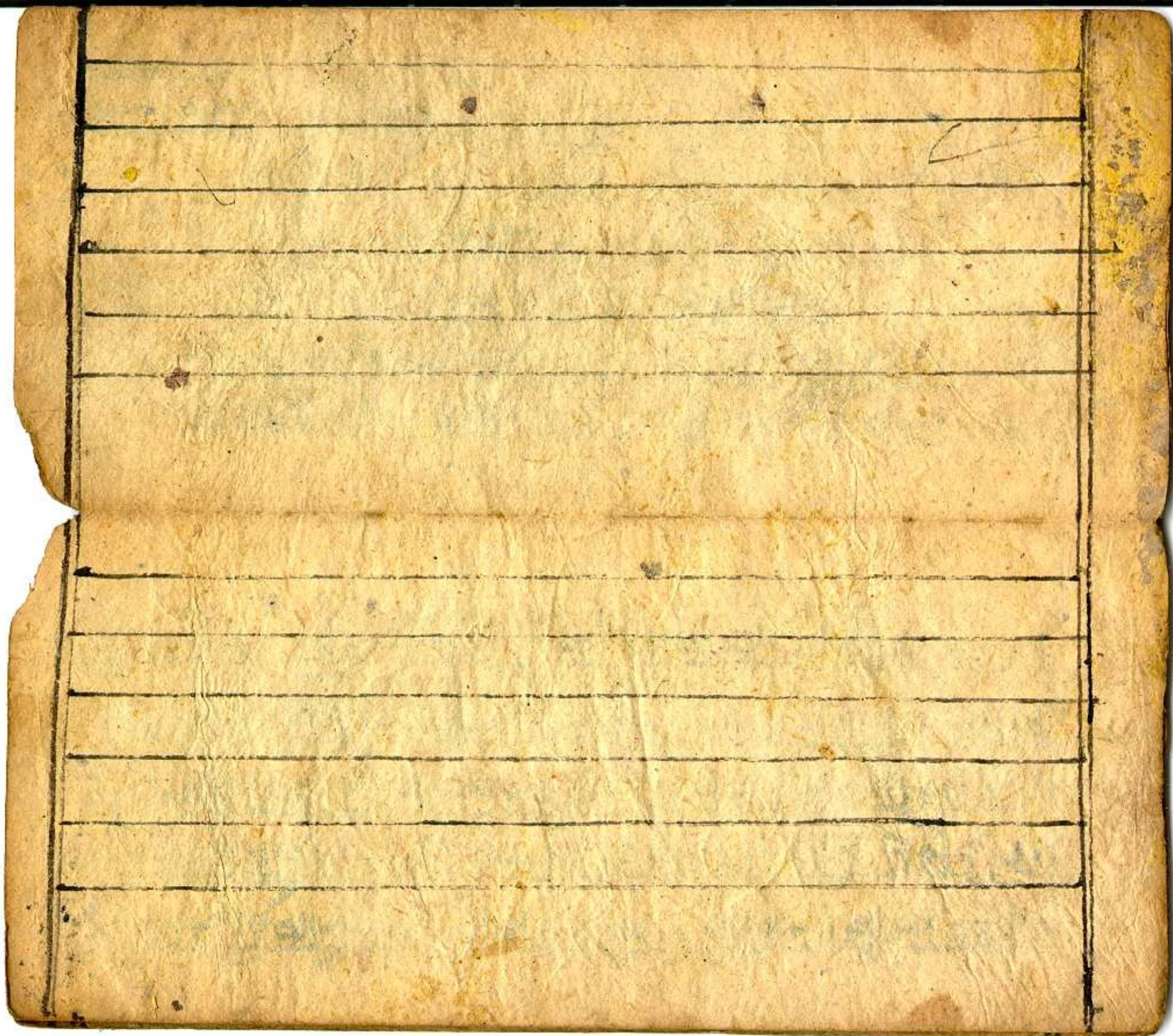
(4)

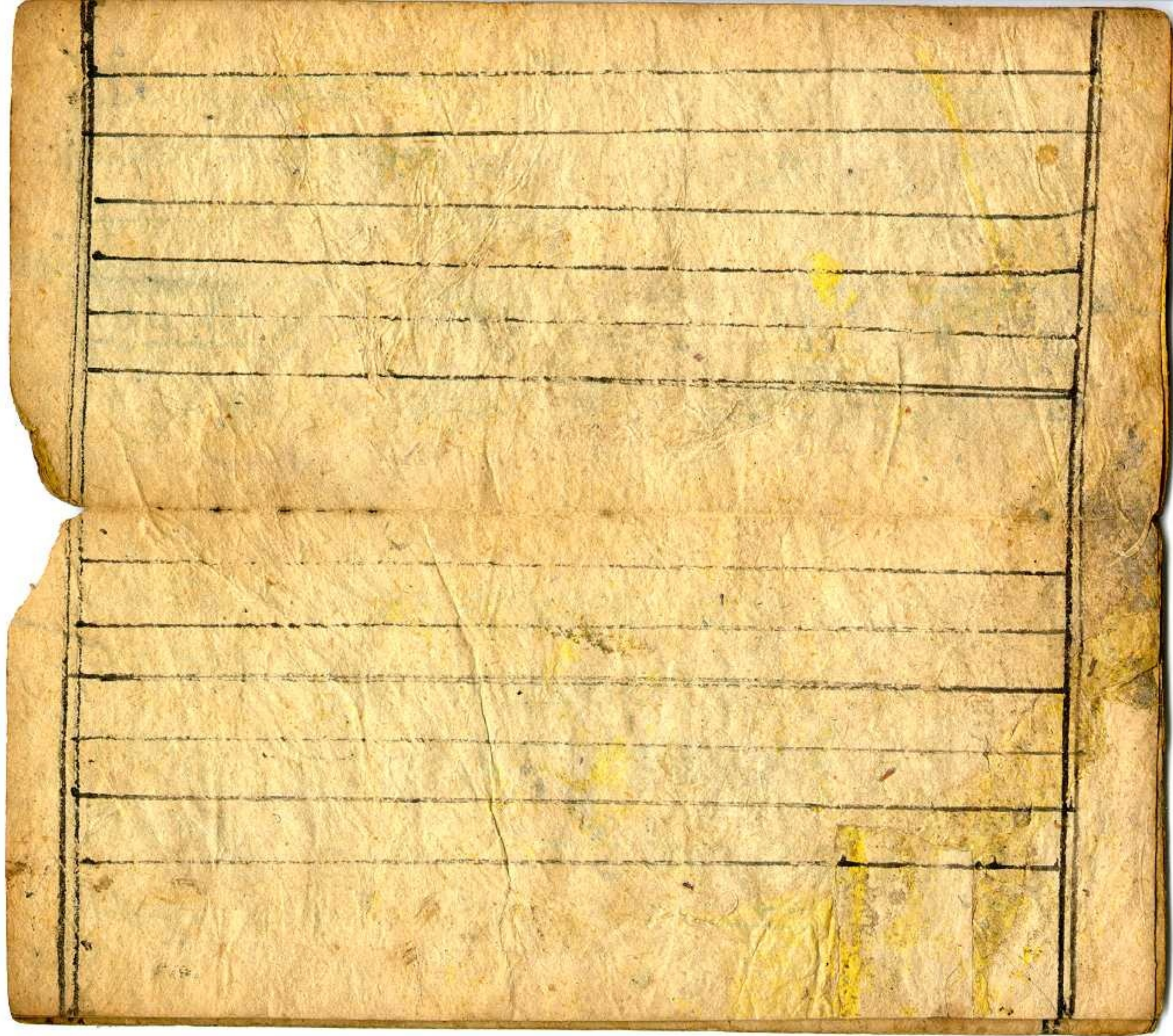
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

Handwritten text in a cursive script, likely a historical or religious document, written on aged, yellowed paper. The text is written in a single line across the top of the page.







॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

五

hid

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥